

उत्तराखण्ड की मानसखंड कॉरिडोर यात्रा

चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग भारतीय रेलवे के सहयोग से कुमाऊँ क्षेत्र के प्राचीन मंदिरों को लोकप्रिय बनाने के लिये 'मानसखंड कॉरिडोर यात्रा' शुरू करेगा।

मुख्य बंदि:

- तीरथयात्रा के लिये यात्रियों को पुणे से पथौरागढ ज़िले के टनकपुर तक ले जाने के लिये एक समर्पित ट्रेन सेवा की व्यवस्था की गई है।
 - ट्रेन दो बैचों में 600 से अधिक तीरथयात्रियों को 'मानसखंड' के प्रसिद्ध मंदिरों तक ले जाएगी, जो प्राचीन हद्वि ग्रंथों में उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र को संदर्भित करने के लिये इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्यांश है।
- टूर पैकेज के तहत श्रद्धालुओं को टनकपुर, चंपावत, पथौरागढ और अल्मोडा के मंदिरों एवं अन्य धार्मिक स्थानों पर ले जाया जाएगा तथा इन मंदिरों के पौराणिक महत्त्व के बारे में जानकारी दी जाएगी।
- चंपावत में बालेश्वर, मनेश्वर एवं मायावती मंदिरों के दर्शन, हाट कालिका, पथौरागढ में पाताल भुवनेश्वर मंदिर, चतिई में जागेश्वर तथा गोलू देवता मंदिर, नंदा देवी, कसार देवी, अल्मोडा में कटारमल, उधम सहि नगर में नानकमत्ता साहबि गुरुद्वारा और नैना देवी मंदिर के दर्शन नैनीताल में तीरथयात्रियों के लिये यात्रा कार्यक्रम का हिस्सा है।

कुमाऊँ क्षेत्र

- इसमें राज्य के छह ज़िले शामिल हैं: अल्मोडा, बागेश्वर, चंपावत, नैनीताल, पथौरागढ और उधम सहि नगर।
- ऐतिहासिक रूप से मानसखंड और फरि कुरमांचल के रूप में जाना जाने वाला कुमाऊँ क्षेत्र इतिहास के दौरान कई हद्वि राजवंशों द्वारा शासित रहा है।
- कुमाऊँ मंडल की स्थापना वर्ष 1816 में हुई थी, जब अंग्रेज़ों ने गोरखाओं से इस क्षेत्र को पुनः प्राप्त किया था, जिन्होंने वर्ष 1790 में कुमाऊँ के तत्कालीन साम्राज्य पर कब्ज़ा कर लिया था।
- स्वतंत्र भारत में राज्य को उत्तर प्रदेश कहा जाता था। वर्ष 2000 में, कुमाऊँ सहित उत्तर प्रदेश से अलग होकर नया राज्य उत्तराखंड बनाया गया।